Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.S.O. -4

भारत में समाजशास्त्र

(Sociology in India)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Poonam Maurya,* M.A. (sociology), M.Ed.

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 400/-

Content

भारत में समाजशास्त्र
(Sociology in India)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-5
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-4
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-5
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-7
Question Paper—December, 2019 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-3
Question Paper—December, 2017 (Solved) 1-4
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1-4

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

भारत में समाजशास्त्र का उद्‌भव

1. भारत में समाजशास्त्र के उद्‌भव की सामाजिक पृष्ठभूमि 1
2. समाजशास्त्र का उद्‌भव : मुद्दे और विषय-वस्तु 10
3. भारत में ग्राम अध्ययन 16

जातिगत परिप्रेक्ष्य

4. उपनिवेशवादी परिप्रेक्ष्य 29
5. ब्राह्मणवादी परिप्रेक्ष्य 37
6. क्षेत्र का परिदृश्य 40
7. अम्बेडकर और लोहिया के जाति सम्बन्धी विचार 46
8. जनगणना का परिप्रेक्ष्य 52

परिवार, विवाह तथा नातेदारी का परिप्रेक्ष्य

9. घर एवं परिवार 58
10. घर सहयोग-संघर्ष की इकाई के रूप में 71

11. विवाह और उसके बदलते स्वरूप 74
12. भारत में नातेदारी का अध्ययन : वंशक्रम और विवाह सम्बन्धी दृष्टिकोण 85

वर्ग, जाति और लैंगिक भेदभाव का परिप्रेक्ष्य

13. कृषक वर्ग और श्रेणियाँ 95
14. मजदूर वर्ग 103
15. मध्य वर्ग 106
16. लैंगिक (जेंडर) भेदभाव, जाति और वर्ग 113

भारत में जनजातियों का परिप्रेक्ष्य

17. जनजाति, क्षेत्र और सामान्य सम्पत्ति संसाधन 117
18. जनजाति और जाति 120
19. जनजातियों पर वेरियर एल्विन और जी.एस. घुर्ये के विचार 127
20. जनजातियों में सामाजिक विभेदीकरण 135

धर्म के समाजशास्त्र का परिप्रेक्ष्य

21. धर्म और राजनीति 141
22. धर्म और संस्कृति 150
23. धर्म के सहचारी और विभाजनात्मक आयाम 161
24. धर्मनिरपेक्षीकरण 165

सामाजिक प्रक्रियाओं का गतिविज्ञान

25. शहरीकरण 176
26. प्रवासन 182
27. औद्योगीकरण 191
28. भूमण्डलीकरण 201

सामाजिक आन्दोलनों का परिप्रेक्ष्य

29. सामाजिक आन्दोलन : अर्थ तथा विस्तार 208
30. सामाजिक आन्दोलनों के प्रकार 211
31. कृषक आन्दोलन 215
32. नवीन सामाजिक आन्दोलन 219

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

भारत में समाजशास्त्र

(Sociology in India)

M.S.O.-4

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं* ***पांच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक भाग से दो प्रश्न कीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग-I

प्रश्न 1. भारत में समाजशास्त्र के आविर्भाव का पता लगाइए।

उत्तर–भारत में समाजशास्त्र के उद्भव की सामाजिक पृष्ठभूमि के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के विचार, भारत और यूरोप दोनों स्थानों के परिस्थितीय इतिहास का वर्णन करता है। तत्त्वमीमांसात्मक और अन्य संसार की धारणा के अतिरिक्त मध्य युग के ग्रन्थों से यह ज्ञात होता है कि लेखकों को पृथ्वी व मनुष्य के जीवन की सत्यता व समस्याओं के सम्बन्ध में बहुत अधिक रुचि थी।

इस समय अंग्रेजों के आगमन के पश्चाततत जब यह अनुभव होने लगा था कि समाज सामर्थ्यविहीन हो गया है तथा कुछ संस्थाएँ एवं रीति-रिवाज स्थायी हो गए, तब समाज में परिवर्तन के साथ-साथ उनका भी परिवर्तित होना आवश्यक लगने लगा था। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने काफी बड़ा झटका दिया, परन्तु अंग्रेजी शासन भी उस समय स्वतन्त्र रूप से कार्य नहीं कर पा रहा था, परन्तु भारतीय जनता की सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में आँकड़े एकत्रित किए तथा उनका उपयोग अपने हितों के लिए ही किया।

अंग्रेज व्यक्तिवादी मूल्यों को महत्त्व देते थे, इसीलिए उनके द्वारा अपने समाज की कभी-कभी उपेक्षा भी हुई। अंग्रेज केवल इस देश में जाँच करने की स्वतंत्रता का मूल्य व औचित्य लेकर प्रवेश करने आए थे। इस कारण उन्होंने भारतीय बुद्धिजीवियों के मन में हलचल उत्पन्न कर दी। इसी के माध्यम से भारत में समाजशास्त्र के उद्गम की नींव की योजना का शुभारम्भ हो गया।

इस समय भी भारतीय समाजशास्त्री व मानवविदों पर अकादमिक उपनिवेशवाद का काफी प्रभाव पड़ रहा था, इसीलिए वे अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ समूह के प्रति स्वयं को आभारी समझते हैं। समाजशास्त्र का आगमन पश्चिमी देशों की देन है, इसीलिए आरम्भिक अवस्था में यह प्राकृतिक अनुभव होता था। राष्ट्रवादियों का यह विचार अधिक बलशाली था कि अवधारणाओं व सिद्धान्तों का प्रतिपादन यह उपयोगी तरीके से नहीं कर पाया, क्योंकि उनके अनुयायी तथा विचारक समाजशास्त्र के सम्बन्ध में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक की व्यापक पहुँच रखते थे।

अत: स्वतंत्र भारत जो एक समर्थ समाज का सपना देख रहा था, यह आर्थिक रूप से विकसित हो, जैसा कि औपनिवेशिक सरकार के सामने स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना मत रखा था, इसमें भारतीयों की क्या प्रतिक्रिया होगी, यह जानना भी आवश्यक था। समाजशास्त्र का उद्देश्य था देश में नियोजित विकास करना और राष्ट्रीय योजना आयोग का निर्माण करना। इसी के पश्चात अनुसंधान कार्यक्रम समिति गठित की गई। इस समिति के अन्तर्गत देशों के लोगों में जीवन और कार्यकलापों के विषय में विश्वसनीय तथ्यों की माँग उत्पन्न हुई। समाजशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए नवीन अवसर उपलब्ध कराए गए तथा सम्पूर्ण देश में समाजशास्त्र के पृथक्-पृथक् विभाग खोले गए, परन्तु फिर भी यह देखा गया कि अन्य देशों की अपेक्षा भारतीयों की विशिष्टता को समझने का प्रयास नहीं किया, अपितु उनकी उपेक्षा की गई। आज भी भारतीय समाजशास्त्र के सम्बन्ध में विचार करना कठिन है।

इसे भी देखें संदर्भ–अध्याय-1, पृष्ठ-2, प्रश्न 2, पृष्ठ-3, प्रश्न 4

प्रश्न 2. भारतीय सामाजिक संरचना में सामाजिक वर्गों और लैंगिक सोपान-क्रम के महत्त्व की चर्चा कीजिए।

उत्तर–लैंगिक भेदभाव का अर्थ, जाति और वर्ग में क्षेत्रीय विभिन्नताओं के सम्बन्ध में विचार प्रकट करना है। समकालीन भारत में लैंगिक भेदभाव, जाति और वर्ग को गतिशील परिघटना माना गया है, जो प्रत्येक क्षेत्र एवं समुदाय में भिन्न होती है। लैंगिक भेदभाव में भूमिकाएँ महत्त्वपूर्ण कारकों, श्रम विभाजन, परिवार में समाजीकरण की प्रक्रियाओं द्वारा स्थापित प्रतिबन्धों, जाति, विवाह और सगोत्रता संगठन आदि कारकों के मध्य परस्पर क्रिया के द्वारा निर्धारित होती हैं।

इसके अतिरिक्त वर्ग की संकल्पना से क्या अभिप्राय है या इसके अन्तर्गत कौन-कौन सम्मिलित हैं तथा भारत में मध्य वर्ग है भी या नहीं आदि। वर्ग, जिसे ऐसे व्यक्तियों का समूह माना जाता

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

है, जो उत्पादक संगठन में एक समान कार्य करते हैं। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित वर्ग आते हैं; जैसे–स्वामी-दास, स्वतन्त्र व्यक्ति–गुलाम व्यक्ति, कार्मिक–उत्पीड़क। इसी प्रकार आर्थिक दृष्टि से भी वर्गों को विभक्त किया गया है–धनी व निर्धन, पूँजीपति एवं मजदूर, समाज में प्रत्येक स्थान पर वर्गों का विभक्तीकरण दिखाई देता है। 'वर्ग' की संकल्पना के दो उल्लेखनीय रूप–सामाजिक वर्ग को सम्पत्ति सम्बन्धों के सन्दर्भ में विभेदित समूह के समान देखा जा सकता है, जो आर्थिक रूप कहलाता है। संस्थागत रूप से व्यक्ति की सदस्यता को निर्धारित किया जाता है, जिसमें निश्चित समूह में व्यक्ति का नाता एक परिवार से सदैव के लिए सम्बद्ध हो जाता है। परिवार से उसे विशेष अधिकार स्वत: प्राप्त हो जाते हैं।

मध्य वर्ग की संकल्पना का स्वरूप महानगर से सम्बन्धित है और कार्यक्षेत्र राष्ट्रव्यापी है। मध्य वर्ग के उदय में मार्क्स का विवरण अतिरिक्त पैदावार से सम्बन्धित था, जिसका अभिप्राय था कि अमुक वर्ग जितना उत्पादन करता है, उससे अधिक उसका उपभोग करता है और वृद्धिशील जटिल औद्योगिक संरचना, में कार्य करने के लिए गैर-उत्पादक कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता होती है। मार्क्स का यह मत है कि पूँजीवाद विकसित होने के साथ-साथ मध्य वर्ग की उत्पत्ति हुई। कुछ विचारकों का मानना है कि बाजार संरचना के साथ उस अत्यधिक महत्त्वपूर्ण मध्य वर्ग का विकास हुआ, जिसके पास उत्पादन के अपने साधन नहीं हैं। **गिडिन्स** ने विकसित पूँजीवादी समाज में तीन प्रमुख वर्गों का स्पष्टीकरण किया है–उच्च वर्ग, मध्य वर्ग और निम्न वर्ग या श्रमिक वर्ग।

इसे भी देखें–संदर्भ अध्याय-16, पृष्ठ-115, प्रश्न 3

प्रश्न 3. भारतीय समाज में जाति के अध्ययन में वंशक्रम दृष्टिकोण की प्रासंगिकता का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-85, प्रश्न-1, पृष्ठ-86, प्रश्न 2, पृष्ठ-89, प्रश्न 7

प्रश्न 4. 'भारत में कृषीय वर्ग संबंधों में हरित क्रांति के फलस्वरूप मूलभूत परिवर्तन हुए हैं।' सविस्तार लिखिए।

उत्तर–कृषीय समाजों की सामाजिक संरचना में विविधताएँ देखने को मिलती हैं। कृषीय वर्ग संरचना का स्वरूप प्रत्येक क्षेत्र में पृथक्-पृथक् होता है। आधुनिक समय में अधिकांश समाजों में कृषीय संरचना में मूल परिवर्तन हो रहे हैं। पश्चिम के सर्वाधिक विकसित समाजों में कृषि अर्थव्यवस्था का सीमांत क्षेत्र बन गया है और उनकी कामकाजी जनसंख्या का छोटा हिस्सा इसमें नियोजित किया जाता है। कृषि पर आश्रित रहने वाले लोगों का अनुपात कम होने लगा है।

कृषि अध्ययनों के क्षेत्र में विद्वानों का एक प्रभावशाली समूह है, जो कृषीय समाजों का वर्ग के संदर्भ में विश्लेषण करने के विरुद्ध है। उनके अनुसार कृषक समाज जनसमूह का केवल एक प्रकार है, जो आधुनिक शहरी औद्योगिक समाज के स्वरूप से अलग है। इस अध्याय के अन्तर्गत अविभेदित कृषक समाज की शास्त्रीय धारणा, जो युद्ध के पश्चात विकसित हुई थी। कृषक समाज को पूर्व औद्योगिक स्वरूप का माना जाता था। इस धारणा का आधार पश्चिमी अनुभव था। औद्योगिक क्रान्ति के आरम्भ के साथ-साथ जब अर्थशास्त्र विकसित हुआ, उस समय पारम्परिक कृषक की जीवन-शैली का परिवर्तित रूप हमारे समक्ष आया, तब आधुनिक शहरी जीवन-शैली ने स्थान ग्रहण कर लिया।

18वीं व 19वीं शताब्दी के दौरान हुई औद्योगिक क्रान्ति की सफलता के साथ सामन्ती समाज टूटता चला गया, उसका स्थान पूँजीवाद, अर्थशास्त्र के विकास ने ग्रहण कर लिया। तथापि समय के साथ सामंतवादी शब्द ने एक सामान्य अर्थ भी अर्जित कर लिया था। इसका प्रयोग यूरोप के अतिरिक्त विश्व के अन्य भागों में पूर्व आधुनिक कृषीय समाजों को स्पष्ट करने के लिए किया जाता था।

विज्ञान व प्रौद्योगिकी के आगमन से बढ़ती उपज से काफी परिवर्तन आए हैं। इसके अतिरिक्त नकदी फसल का भाव आरम्भ किया गया। इसके द्वारा गरीब और अमीर के बीच दूरी में अधिक वृद्धि हुई। इससे सामाजिक असमानता विकसित हो गई। आधुनिक किसान ने भी उत्पादन की विधियों में परिवर्तन लाने का प्रयास किया है। अब वह केवल अपने स्वयं के लिए ही अनाज उगाता है। आधुनिक युग में भूस्वामी कृषि को एक उद्यम स्वरूप देखने लगे। आज कृषि वर्ग समूह का विभाजन होने लगा है।

इसे भी देखें–संदर्भ–अध्याय-13, पृष्ठ-101, प्रश्न-7, प्रश्न 8

प्रश्न 5. भारत में नातेदारी व्यवस्था के अध्ययन संबंधी मुख्य दृष्टिकोणों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-86, प्रश्न-2, पृष्ठ-89, प्रश्न 7

भाग-II

प्रश्न 6. भारत में जनजातीय प्रश्न पर जी.एस. घुरिये के विचारों की आलोचनात्मक चर्चा कीजिए।

उत्तर–वेरियर एल्विन एवं जी.एस. घुर्ये इन दोनों विचारकों के विचारों की जड़ें स्वतंत्रता के पश्चात भारत में हैं। एल्विन ने तो यह भी विचार दिया है कि जनजातियाँ विशिष्ट समुदाय होते हैं। अत: उन्हें अपने प्राकृतिक वातावरण की सुरक्षा करनी चाहिए, परन्तु घुर्ये के अनुसार जनजातियाँ हिन्दू समाज का ही एक अंग हैं–उन्हें इसी रूप में स्वीकृति मिलनी आवश्यक है। आज जनजातीय लोग वनवासी नहीं माने जाते, वे विशाल भारत के छोटे जगत के समान हैं।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

भारत में समाजशास्त्र

(SOCIOLOGY IN INDIA)

भारत में समाजशास्त्र का उद्भव

भारत में समाजशास्त्र के उद्भव की सामाजिक पृष्ठभूमि

1

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

इस अध्याय के अन्तर्गत समाजशास्त्र विषय के उद्भव के सम्बन्ध में अवगत कराया गया है। इस शास्त्र को भारत में शिक्षा की एक शाखा के रूप में वर्णित किया गया है। भारतीय समाज व उसकी संस्कृति से सम्बन्धित विभिन्न तथ्यों को स्पष्ट किया गया है। जाति का परिप्रेक्ष्य, परिवार विवाह एवं नातेदारी, वर्ग, जाति और लैंगिक भेदभाव तथा भारत में जनजाति और धर्म का परिप्रेक्ष्य आदि की जानकारी देने का प्रयास किया है। भारतीय समाज में होने वाले परिवर्तनों की प्रक्रिया के विषय में, जैसे–शहरीकरण, भूमण्डलीकरण और प्रवास की प्रक्रियाएँ और अंततः आन्दोलन की भी स्पष्ट व्याख्या की गई है।

भारत में समाजशास्त्र के उद्भव की सामाजिक पृष्ठभूमि के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के विचार, भारत और यूरोप दोनों स्थानों के परिस्थितीय इतिहास का वर्णन करता है। तत्त्वमीमांसात्मक और अन्य संसार की धारणा के अतिरिक्त मध्य युग के ग्रन्थों से यह ज्ञात होता है कि लेखकों को पृथ्वी व मनुष्य के जीवन की सत्यता व समस्याओं के सम्बन्ध में बहुत अधिक रुचि थी।

इस समय अंग्रेजों के आगमन के पश्चाततत जब यह अनुभव होने लगा था कि समाज सामर्थ्यविहीन हो गया है तथा कुछ संस्थाएँ एवं रीति-रिवाज स्थायी हो गए, तब समाज में परिवर्तन के साथ-साथ उनका भी परिवर्तित होना आवश्यक लगने लगा था। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने काफी बड़ा झटका दिया, परन्तु अंग्रेजी शासन भी उस समय स्वतन्त्र रूप से कार्य नहीं कर पा रहा था, परन्तु भारतीय जनता की सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में आँकड़े एकत्रित किए तथा उनका उपयोग अपने हितों के लिए ही किया।

अंग्रेज व्यक्तिवादी मूल्यों को महत्त्व देते थे, इसीलिए उनके द्वारा अपने समाज की कभी-कभी उपेक्षा भी हुई। अंग्रेज केवल इस देश में जाँच करने की स्वतंत्रता का मूल्य व औचित्य लेकर प्रवेश करने आए थे। इस कारण उन्होंने भारतीय बुद्धिजीवियों के मन में हलचल उत्पन्न कर दी। इसी के माध्यम से भारत में समाजशास्त्र के उद्गम की नींव की योजना का शुभारम्भ हो गया।

इस समय भी भारतीय समाजशास्त्री व मानवविदों पर अकादमिक उपनिवेशवाद का काफी प्रभाव पड़ रहा था, इसीलिए वे अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ समूह के प्रति स्वयं को आभारी समझते हैं। समाजशास्त्र का आगमन पश्चिमी देशों की देन है, इसीलिए आरम्भिक अवस्था में यह प्राकृतिक अनुभव होता था। राष्ट्रवादियों का यह विचार अधिक बलशाली था कि अवधारणाओं व सिद्धान्तों का प्रतिपादन यह उपयोगी तरीके से नहीं कर पाया, क्योंकि उनके अनुयायी तथा विचारक समाजशास्त्र के सम्बन्ध में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक की व्यापक पहुँच रखते थे।

अतः स्वतंत्र भारत जो एक समर्थ समाज का सपना देख रहा था, यह आर्थिक रूप से विकसित हो, जैसा कि औपनिवेशिक सरकार के सामने स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना मत रखा था, इसमें भारतीयों की क्या प्रतिक्रिया होगी, यह जानना भी आवश्यक था। समाजशास्त्र का उद्देश्य था देश में नियोजित विकास करना और राष्ट्रीय योजना आयोग का निर्माण करना। इसी के पश्चात अनुसंधान

www.neerajbooks.com

कार्यक्रम समिति गठित की गई। इस समिति के अन्तर्गत देशों के लोगों में जीवन और कार्यकलापों के विषय में विश्वसनीय तथ्यों की माँग उत्पन्न हुई। समाजशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए नवीन अवसर उपलब्ध कराए गए तथा सम्पूर्ण देश में समाजशास्त्र के पृथक्-पृथक् विभाग खोले गए, परन्तु फिर भी यह देखा गया कि अन्य देशों की अपेक्षा भारतीयों की विशिष्टता को समझने का प्रयास नहीं किया, अपितु उनकी उपेक्षा की गई। आज भी भारतीय समाजशास्त्र के सम्बन्ध में विचार करना कठिन है।

स्वपरख-अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय समाजशास्त्र का ऐतिहासिक आधार क्या है? व्याख्या कीजिए।

उत्तर–भारतीय समाजशास्त्र का ऐतिहासिक आधार पश्चिमी दर्शन और वैज्ञानिक परम्पराओं के आपसी टकराव के परिणामस्वरूप उभरने वाली परिस्थितियाँ हैं। इसके साथ ही भारत की अनेक आंतरिक प्रक्रिया, जैसे ब्रिटिश उपनिवेशवाद तथा स्वतंत्र गणतंत्र की स्थिति भी सम्मिलित हैं।

भारत में समाजशास्त्र की उत्पत्ति में उपनिवेशवाद के परिणामस्वरूप होने वाले पश्चिमीकरण एवं आधुनिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। हालाँकि अन्य देशों की भाँति भारत में कुछ ऐसे विचारक हुए हैं, जिनकी कृतियों में हमें प्राचीन सामाजिक व्यवस्था की झलक मिलती है। कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' मनु की 'मनुस्मृति' आदि प्राचीन ग्रन्थों में प्राचीन भारतीय समाज के विषय में काफी जानकारी मिलती है, लेकिन इन कृतियों का स्वरूप समाजशास्त्रीय नहीं था।

यूरोपीय शासकों एवं व्यापारियों ने अपने देश के मानवशास्त्रियों, प्रशासकों, इतिहासकारों एवं इसाई धर्म प्रचारकों को ग्रामीण समुदाय, संयुक्त परिवार, धर्म साहित्य एवं संस्कृति का अध्ययन करने के लिये बहुत अधिक प्रोत्साहित किया। इन लोगों ने भारतीय समाज एवं संस्कृति को अत्यधिक गहराई से समझने का प्रयास किया, जिससे वे भारत पर सफलतापूर्वक अपना प्रभुत्व बनाए रख सकें। इसलिए उन्होंने भारतीय समाज का गहनता से मानवशास्त्रीय अध्ययन किया। एम.एन. श्रीनिवास ने (1973) में एक लेख में 1773 से 1900 तक के काल को भारतीय मानवशास्त्र के साथ-साथ समाजशास्त्र का प्रारम्भिक काल माना है।

भारत में समाजशास्त्र पश्चिमी देशों से एक विज्ञान के रूप में ही आया।

भारत में समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण, का प्रारम्भ पाश्चात्य विचारकों में मार्क्स, हेनरी मैन एवं मैक्स वेबर के नाम आते हैं। हेनरी मैन ने अपनी कृतियों में हिन्दू कानून व्यवस्था आदि की चर्चा की और समाजशास्त्रीय विधि के माध्यम से इसके विश्लेषण की बात कही। मुख्य रूप से हेनरी मैन की अभिरुचि धर्म, विधि और नैतिकता के आपसी सम्बन्ध में थी

मैक्स मूलर, विलियम जॉन्स आदि भारत के प्राचीन साहित्य में अभिरुचि लेते थे। इन साहित्यों की व्याख्या से भी अनेक समाजशास्त्रीय तथ्य हमारे समक्ष आए।

ब्रिटिश काल में अंगेज प्रशासकों ने भी आदिवासियों और ग्रामीणों के जीवन और समाज का विस्तृत अध्ययन किया। इस संदर्भ में चार्ल्स मेटकाफ, बैडेन पॉवेल, नेस्फील्ड रिजले आदि के नाम प्रमुख हैं।

औद्योगिकीकरण और शहरीकरण से सम्बद्ध समस्याएँ भी धीरे-धीरे उभरकर सामने आ रही थीं। नगरीय समाज की सामाजिक आर्थिक स्थिति भी इस सामाजिक संबंध की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करने लगी।

भारत में विभिन्न प्रकार की जटिल परिस्थितियों में समाजशास्त्र का जन्म हुआ, क्योंकि हर प्रकार की क्रान्ति समाज में चल रही थी। परन्तु भारतीय समाजशास्त्र में पश्चिमी समाजशास्त्र की झलक दिखायी दे रही थी, क्योंकि पाश्चात्य समाजशास्त्रियों ने ही भारत में समाजशास्त्र का प्रसार करने में अपना योगदान दिया था। भारतीय जनसमूह के मनन-चिन्तन, रीति-रिवाजों पर अंग्रेजों का प्रभाव पड़ा। अपने समय के परम्परागत मार्ग को छोड़कर सामाजिक विचारधारा को नवीन रूप प्रदान करने का सम्पूर्ण श्रेय प्लेटो को दिया जाता है। प्लेटो ने समाज की तुलना एक मानव शरीर से की तथा उसका अध्ययन का तरीका अत्यन्त सरल था। उसका मानना था कि जिस प्रकार मानव शरीर के अनेक अंग एक-दूसरे से संलग्न हैं, अलग करने पर उनका अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है, ठीक उसी प्रकार समाज के सभी अंग एक-दूसरे पर निर्भर रहते हैं। सामाजिक विचारकों ने मनुष्य की प्रकृति के विषय में बताया और कहा कि मनुष्य स्वाभाविक रूप से एक तार्किक प्राणी है, इसीलिए उसे कर्म व विचार करने की स्वतंत्रता प्रदान की जाती है।

प्रश्न 2. भारतीय समाज को समझने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–भारतीय समाज को समझने के लिए दो दृष्टिकोण मुख्यतः प्रचलित हैं–

(i) शास्त्रीय या पुस्तकीय (Classical or Textual View)
(ii) क्षेत्रीय दृष्टिकोण (Field View)

***(i)* शास्त्रीय या पुस्तकीय दृष्टिकोण**–इसके अन्तर्गत उन ग्रन्थों व महाकाव्यों का सहयोग लिया जाता है, जिनमें भारतीय समाज के प्रत्येक पहलू का चित्रण किया गया है, जो समाज के एक आदर्श स्वरूप को प्रस्तुत करता है, जिसके अन्तर्गत समाजशास्त्रीय विचारकों के विचार पृथक्-पृथक् होते हैं। इस दृष्टिकोण को आदर्शात्मक दृष्टिकोण की संज्ञा दी जाती है। इस विचारधारा को भी दो सूक्ष्म भागों में विभाजित किया गया है–

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

1. दर्शनशास्त्रीय दृष्टिकोण
2. भारतीय विद्याशास्त्रीय दृष्किोण

1. दर्शनशास्त्रीय दृष्टिकोण के अन्तर्गत भारतीय इतिहास व परम्परागत भारतीय चिन्तन को प्रमुखता प्रदान की जाती है।
2. भारतीय विद्याशास्त्रीय दृष्टिकोण, जिसके समर्थक समाज को भारतीय धर्मग्रन्थों तथा वैधानिक ऐतिहासिक प्रलेखों पर आधारित मानते हैं।

***(ii)* क्षेत्रीय दृष्टिकोण**–इसके अन्तर्गत क्षेत्रीय वास्तविकता को आधार माना जाता है। अभिप्राय यह है कि समाज की संरचना के अनुरूप यथार्थ का चित्रण करने का प्रयास करना। यह सर्वेक्षण आनुभविक सम्बन्धों, घटनाओं तथा तथ्यों से सम्बन्धित है, जिनमें इसकी व्याख्या, कार्यकारण सम्बन्धों का अन्वेषण, नवीन तथ्यों की खोज तथा पुराने तथ्यों की प्रामाणिकता की जाँच वैज्ञानिक तरीके या विधि से करने का प्रयास किया जाता है। अत: इसे एक व्यवस्थित पद्धति की संज्ञा दी जाती है। आनुभविक अनुसन्धान समस्या से सम्बन्धित क्षेत्र में जाकर आरम्भ किए जाते हैं। अत: इसे यदि प्रयोगसिद्ध अनुसन्धान कहा जाए तब अधिक उपयुक्त होगा। यही भारतीय समाज का क्षेत्रीय दृष्टिकोण कहा जाता है।

प्रश्न 3. भारत में सामाजिक विचारों की विरासत का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उत्तर–भारत सहस्त्रों वर्ष पुरानी परम्पराओं से जुड़ा हुआ है, जिनका वर्णन विभिन्न धार्मिक व दार्शनिक ग्रन्थों में देखने को मिलता है। इन ग्रन्थों के अन्तर्गत मनुष्य व समाज का वर्णन मिलता है। विभिन्न धारणाएँ, जो मानव व समाज तथा उनके मूल्यों से भी अवगत कराती हैं, वे वास्तव में सामाजिक यथार्थ से जुड़ी हुई प्रतीत नहीं होतीं, क्योंकि वे नीति विषयक होती हैं।

प्राचीन काल से लेकर आज तक भारतीय चिन्तन विभिन्न सोपानों से होकर गुजरा है। इस प्रसंग में सामाजिक विचार और समाजशास्त्रीय विचारों में भेद करने की आवश्यकता है। भारत में समाजशास्त्र के उदय से पूर्व समाज के विभिन पक्षों से संबंधित विचारों को सामाजिक चिन्तन के अन्तर्गत रखा जा सकता है। भारत में सामाजिक विचारों की परम्परा प्राचीन परम्परा है।

सामाजिक जीवन से सम्बंधित भारत के धार्मिक और दार्शनिक विचारों का आदि रूप वेदों में देखने को मिलता है। वेदों में आरम्भिक भारतीय जनों, दस्युओं तथा आर्यों के पारस्परिक संघर्ष और सम्पर्क परिवार, विवाह, कर्मकाण्ड, वर्णाश्रम तथा राजनीतिक व्यवस्था का वर्णन है। वैदिक काल में ही भारतीय सामाजिक संरचना के चार प्रमुख स्तरों–वर्णव्यवस्था, ग्राम समुदाय, कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था एवं संयुक्त परिवार प्रणाली की नींव पड़ी। उत्तर वैदिक काल में इन विषयों से संबंधित स्वतन्त्र चिन्तन परम्पराएँ, धर्मशास्त्र और ब्राह्मण ग्रन्थों में विस्तार से विचार हुआ। उपनिषदों के चिन्तन का सम्बन्ध दार्शनिक रूप से प्रश्नों में है।

भारत में सामाजिक विचारों की विरासत के तीन पहलु हैं–

1. अमूर्त दार्शनिक सिद्धान्त–इनके विकास में हिन्दू, जैन और बौद्ध दार्शनिक परम्पराओं का अपदान है। भारतीय दार्शनिक चिन्तन मुख्य रूप से तर्क और कल्पना पर आधारित है।

2. यह पक्ष मुख्य रूप से सामाजिक दर्शन का है। इसके अन्तर्गत वर्ग, आश्रम, धर्म, विवाह, परिवार, गोत्र, सम्पति तथा राजनीति के विभिन्न पक्षों पर विचार किया जाता है। चिन्तन का यह प्रश्न धर्म, दर्शन, रीति-रिवाज तथा अनुभव पर आधारित है। हिन्दू सामाजिक चिन्तन में वर्ण तथा आश्रम का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसके द्वारा सामाजिक स्तरण एवं समाजीकरण की प्रक्रिया को समझा जा सकता है।

3. यह पक्ष साक्ष्य, अनुभव, निरीक्षण और परीक्षण पर आधारित है। भारतीय चिन्तन की अध्ययन विधियों में तर्क एवं अनुमान के साथ साक्ष्य पर बल दिया जाता है। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में धर्म तथा तर्क पर आधारित अध्ययन पद्धति के साथ-साथ अब्वीक्षा तथा वार्ता पर भी समान रूप से बल दिया है।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र, शुक्राचार्य के नीतिशास्त्र, मनु की मनुस्मृति आदि ग्रन्थों से यह ज्ञात होता है कि उस समय की सामाजिक व्यवस्था कैसी थी, किस प्रकार के रीति-रिवाज, सामाजिक प्रथाएँ, परम्पराएँ और आचरण सम्बन्धी आदि नियम प्रचलित थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत में सामाजिक विचारों की विरासत की जड़ें बहुत मजबूत तथा सुदृढ़ होती हैं।

प्रश्न 4. भारत में समाजशास्त्र के उद्‌भव सम्बन्धी वर्गीकरण और अरबी-फारसी आधारों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–भारत में समाजशास्त्र के उद्‌भव सम्बन्धी वर्गीकरण को अनुभव करने वाले राजदूत मैगस्थनीज थे, जिसने भारत के विभिन्न भागों के दर्शन किए तथा भारतीय समाज को सात भागों में विभक्त किया। इसके अतिरिक्त चीनी यात्रियों–फाहियान, युआन च्वांग व आइत्सिंग ने भी भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक स्थितियों का वर्णन किया है।

अरब यात्री जिसमें **अलबीरूनी** प्रमुख है। भारतीय विचार प्रणाली और संस्कृत श्लोकों से वे बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने सामाजिक जीवन व रीति-रिवाज के अपने विचारों में वर्ण-व्यवस्था का विस्तार से वर्णन किया है। **इब्नबतूता** ने भी भारतीयों के दैनिक जीवन व सामाजिक-सांस्कृतिक अवस्था तथा भौगोलिक स्थिति का वर्णन किया तथा लोगों को इनसे अवगत कराया। इन लोगों ने ऐतिहासिक अभिलेखों के समाजवृत्त का कार्य पूर्ण किया, क्योंकि

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

इन्होंने जिसे जिस रूप में भी देखा उसी का आँखों देखा हाल वर्णित किया है।

'आइने अकबरी' के अन्तर्गत अकबर के साम्राज्य का वर्णन किया गया है। हिन्दू समाज की व्यवस्था को उन्होंने अच्छी तरह से जानकर वर्ण-व्यवस्था तक ही सीमित नहीं माना था अपितु सम्बन्धों (रिश्तेदारी) पर आधारित विभिन्न श्रेणियों से भी अवगत कराने का प्रयास 'आइने अकबरी' के माध्यम से किया है। अबुल फजल ने सामाजिक जीवन के मूल्यों को सूक्ष्म रूप से समझा व उनका विश्लेषण किया, तभी समाजशास्त्र के निर्माण के लिए कुछ ठोस सामग्री हमें प्राप्त हो पायी।

इस प्रकार, अरबी व फारसी आधार भी समाजशास्त्र की संरचना में अपनी विशिष्ट भूमिका निभाते हैं।

प्रश्न 5. भारत में ब्रिटिश शासन के आगमन के समय विद्यमान सामाजिक-आर्थिक स्थितियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–भारत में ब्रिटिश शासन के आगमन के समय, जिसे 18वीं शताब्दी का अन्त माना जाता है। इस समय अपने अधिकारियों व मिशनरियों को भारत की संस्कृति व प्राचीन भाषाओं को सीखने के लिए प्रेरित किया, जिससे वे भारतीय समाज के नियमों व ढंगों को उचित प्रकार से समझ सकें। इस प्रक्रिया से स्थानीय लोगों के मन में हलचल मच गयी।

गोपाल हलधर जैसे विद्वान् सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था की विशेषताओं से अवगत कराते हैं। ब्रिटिश काल में इनमें परिवर्तन हुए थे।

भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(i) आर्थिक रूप से
(ii) सामाजिक रूप से, व
(iii) वैचारिक रूप से।

***(i)* आर्थिक रूप से**–इसके अन्तर्गत कृषि को मुख्य आधार माना जाता था। कला व हस्तकला इस समय विकास की ओर उन्मुख हो रही थी।

***(ii)* सामाजिक रूप से**–इसकी संरचना आत्मनिर्भर समीप के गाँवों के समूह द्वारा निर्मित समाज से हुई। सामाजिक, आर्थिक व प्रारम्भिक अवस्था के मध्य सामंजस्य स्थापित करने के लिए जाति को मुख्य संस्था माना जाता था। इसी के माध्यम से सभी समन्वित थे।

***(iii)* वैचारिक रूप से**–भारतीय संस्कृति में समस्त धर्म और दर्शन का आधार कर्म व पुनर्जन्म को माना जाता है, जिसके कारण सामाजिक गत्यात्मकता व व्यक्ति के द्वारा किए गए प्रयास स्थगित हो गए और एक सुरक्षित सामाजिक स्थायित्व बन गया। अंग्रेज सरकार ने ब्रिटिश भारत में अंग्रेजी भाषा को राजभाषा के पद पर पहुँचा दिया और पाश्चात्य ढंग की शिक्षा प्रणाली प्रारम्भ कर दी, जिससे भारत की कुछ प्रतिशत जनता का पश्चिम के साहित्य, जीवन प्रणाली और विचारों से परिचय हुआ, जिससे एक नवीन वर्ग का प्रादुर्भाव हुआ। इससे बौद्धिक आन्दोलन आरंभ हो गया, जिसे नवजागरण के नाम से जाना जाता है।

प्रश्न 6. ब्रिटिश शासन के प्रभाव के कारण भारत की सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था में क्या परिवर्तन हुए? संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर–ब्रिटिश शासन के प्रभाव के कारण भारत की सामाजिक व्यवस्था में निम्नलिखित परिवर्तन हुए–

1. सामाजिक परिवर्तन
2. आर्थिक परिवर्तन

1. सामाजिक परिवर्तन

(i) ईसाई धर्म का प्रसार
(ii) एंग्लो-इण्डियन नामक नई जाति का उदय
(iii) अंग्रेजी ज्ञान प्राप्त एक नवीन वर्ग का उदय
(iv) स्त्रियों की स्थिति पर प्रभाव
(v) कानूनी समानता की स्थापना का जाति प्रथा पर प्रभाव
(vi) संयुक्त परिवार का विघटन
(vii) ग्राम समाज का विघटन

***(i)* ईसाई धर्म का प्रचार**–इस समय ईसाई धर्म का प्रचार बड़ी तीव्र गति से बढ़ने लगा। हजारों की संख्या में ईसाई धर्म के प्रचारक यूरोप के देशों से भारत आने लगे। उन्होंने आतंक, छल, कपट, प्रलोभन और प्रचार के द्वारा देश के हजारों लाखों लोगों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करना आरम्भ कर दिया। ब्रिटिश सरकार ने उन धर्म प्रचारकों को प्रोत्साहन व सहायता प्रदान की। इस प्रकार, दूसरी बार केवल सांस्कृतिक एकता को पुनः धक्का लगा, जो लोग ईसाई बन गए थे वे ब्रिटिशों के भक्त बन गए। वे भारतीय भाषा, सभ्यता और संस्कृति से विमुख होने लगे थे।

***(ii)* एंग्लो-इण्डियन नामक नई जाति का उदय**–जिस समय ब्रिटिश इस देश में अपने साम्राज्य को निर्मित कर रहे थे, उस समय में इंग्लैंड से व्यापार, सेना तथा प्रशासन में काम करने के लिए प्रायः पुरुष ही आते थे। इसलिए वे यहाँ भारतीय स्त्रियों से विवाह कर लेते थे। इस प्रकार से एक नवीन जाति का निर्माण हुआ, जिसे एंग्लो-इण्डियन के नाम से जाना जाता था।

***(iii)* अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त नए वर्ग का उदय**–ब्रिटिश सरकार ने अंग्रेजी भाषा को राजभाषा बनाया व शिक्षा का माध्यम भी यही रखा। इस शिक्षा को प्राप्त करने के पश्चाततत सरकारी नौकरियाँ प्राप्त करना सरल हो गया, जिससे शिक्षित लोगों का एक नया वर्ग बन गया, जिससे इस वर्ग के लोग बहुत अधिक प्रभावशाली बन गए। अंग्रेजी सरकार के भक्त बन गए।

***(iv)* स्त्रियों की स्थिति पर प्रभाव**–ब्रिटिश सरकार ने स्त्रियों की दशा को सुधारने के लिए कुछ उपयोगी कदम उठाए। इस समय सती प्रथा काफी जोरों पर थी। अतः अंग्रेज सरकार ने इसे रोकने के लिए एक कानून का निर्माण कराया। हिन्दुओं की

www.neerajbooks.com